दिसम्बर मास में मधुबन में चली हुई दादी जानकी जी की क्लासेज

7-12-16

''इस पुरानी देह और दुनिया से कोई लगाव नहीं है, बाबा की शक्ति चला रही है''

आज यह तीन बारी की ओम् शान्ति खींचके सभा में लाई है। तो आप सबको देख मिल बहुत खुशी हुई। बाबा ने कहा है जहाँ हमारा तन होगा वहाँ हमारा मन होगा। तो तन और मन यहाँ ही है, जिसमें रचता और रचना का भी ज्ञान बाबा ने ऐसा भर दिया है जो न्यारा बनाके अपने प्यार की शक्ति दे रहा है। जो बाबा शब्द कहने से ही कई कमाल के काम बाबा इस तन से करता है क्योंकि इस पुरानी दुनिया से कोई हमारा लगाव नहीं है, शरीर चल रहा है, बाबा चला रहा है। मुझे क्या करने का है? एक बाबा की अंगुली पकड़कर चल रहे हैं। बाबा की शक्ति काम कर रही है।

अपनी स्थिति बनाने के लिये यह संगम का थोड़ा समय है, उसे सफल करने में कमाई है। 84 जन्म हम बाबा के बच्चे बहुत ऊंचे पार्टधारी होंगे। बाबा और बाबा के बच्चों के सिवाए और कुछ नज़र नहीं आता है क्योंकि और कुछ क्या काम का है!

11.12.16 :-

''व्यर्थ चिंतन करना वा चिंता करना, जैसे मैं इससे मुक्त हूँ, ऐसे आप भी मुक्त रहो''

सभी उसी निश्चय और नशे में तीन बारी ओम् शान्ति का रेसपांड दो। निश्चय है तब तो नशा चढ़ा हुआ है ना। हर एक अपने दिल से पूछे कि मैं कौन और मैं क्या कर रही हूँ... बस। बाबा ने पलकों में बिठा करके हर पल अपना बनाके कहाँ से कहाँ पहुँचाया है।

सभी देह सहित देह के सम्बन्ध से न्यारे हैं और एक दो को देख बड़ा प्यार करते हैं तो सबसे प्यारे भी हैं। बाबा की मुरली का एक एक शब्द वन्डरफुल है। हम सब बाबा के बच्चे हैं तो और कुछ बुद्धि में आता नहीं है।

रोज़ शान्तिवन का भ्रमण कराने ले जाते हैं तो देखती हूँ कि क्या सेवायें चल रही हैं... हम तो कोई सेवा नहीं करते हैं, सिर्फ हाथ ऐसे करते हैं। हरेक का कितना अच्छा पार्ट है, सेवा हरेक निमित्त बन करते हैं। मेरा तो एक बाबा, बाबा साथ में है तो और कुछ न सोचना है, न बोलना है।

बाबा ने जो सिखाया है वो सारा स्मृति में है। वह स्मृति में रहना, यह कितना बड़ा भाग्य है। मुझे तो बाबा और बाबा की नॉलेज की स्मृति के बिना और कुछ आता ही नहीं है। हमारी जो ऑखें हैं ना, आप सबको देखने के लिये हैं, देखना माना मिलना। तो वह खुशी और शक्ति हर बाबा के बच्चे से मिलनसार बनने में सुख मिलता इलाही है। बाबा का बनने के साथ-साथ यह सब आत्मायें जो विश्व भर में हैं, वह सब भले यहाँ हाज़िर नहीं हैं, पर बाबा के सामने हैं, हरेक जहाँ भी है बाबा से दूर नहीं है। साक्षी होकरके देखते हैं तो महसूस होता है कि हमारा बाबा कैसा है! न्यारा और हम सबका प्यारा। बाबा का बच्चा बनना माना 84 जन्मों के लिये सदा खुश रहने की बाबा ने ऐसी सुत्ती पिलाई है, जो न खुश होने की कोई बात ही नहीं है। खुश रहो आबाद रहो, न विसरो न याद रहो... प्रैक्टिकली खुश रहो क्योंकि बाबा ने बहुत कुछ दिया है, बाबा से बहुत कुछ मिला है इसलिए खुशी जैसी खुराक नहीं है।

चिंता करना वा व्यर्थ चिंतन करना हमको नहीं आता है। आप सभी भी यही चाहते हो ना कि इससे मुक्त होना है। तो अपने आपको अच्छी तरह से जानना और बाबा का बनके रहना। और मैं कहेंगी सारे विश्व में जितने भी बहन भाइयों से मिलन हुआ है, कोई भी भाषा वाले हो पर यह मुखड़ा देख ले प्राणी अपने दर्पण में... यह गीत

ये इशारा देता है कि अपने ही आइने में देखो मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, बस यही देखना है। मेरी भावना यह है सभी के दिल में... क्योंकि कोई भी कारण से शरीर छूट सकता है, अभी जिस शरीर में हैं, हरेक देखें मैं कौन हूँ? मेरा बाबा कौन है?

12-12-16

''एक के नाम से हम सब चल रहे हैं, वह चला रहा है, एकानॉमी से यज्ञ की वन्डरफुल सेवा हो रही है''

मैं अमृतवेला यहाँ हाज़िर नहीं होती हूँ परन्तु बाबा के कमरे में, बाबा कैसे खींचता उसका अनुभव करती हूँ। हर आत्मा का संगमयुग में वन्डरफुल पार्ट है। तो जितने भी भाई बहनें बैठे हैं, हरेक आत्मा बाबा की है, बाबा अपना बनाके सभी आत्माओं को मुस्कराना सिखा दिया है। मैं समझती हूँ यह गीत हरेक अन्दर में जरूर गाते होंगे, तब तो मुस्करा रहे हैं ना। अन्दर थोड़ा भी तू मैं कुछ भी कोई भी प्रकार का है तो मुस्करा नहीं सकते। बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखाया। सारी विश्व में देखेंगे, कई बाबा के बच्चे सदा इसी खुशी में मुस्करा रहे हैं क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग। तो संग का यह रंग लगता है।

मुख्य बात है सभी भाई बहनें शान्ति और प्रेम, सच्चाई, खुशी और धीरज को साथ रख अपनी जीवन यात्रा सफल कर रहे हैं। मैं तो कहती हूँ बाबा, आपने हमको दुनिया से न्यारा और अपना प्यारा बना दिया है। सभी को न्यारा बनने में कितना सुख मिलता है! इस क्लास वा संगठन से सभी को यही भासना आती है ना कि मैं बाबा का, बाबा मेरा। सभी बोलो क्योंकि सभी बाबा के हैं और बाबा ने अपना बनाके हर आत्मा को मुस्कराना सिखा दिया। यह मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा, शुक्रिया बाबा। आप सब खुश राज़ी है कोई भी कभी किसी कारण से भी नाराज़ नहीं होते हैं। नाराज़ होना माना राज़ को नहीं जानते।

जितनी सच्चाई है उतनी सफाई है, उतनी सादगी है। फालतू खर्च नहीं है, एकानामी और एकनामी, एक के नाम से ही हम सब चल रहे हैं। वो चला रहा है, हम चल रहे हैं। एकानामी से यज्ञ की वन्डरफुल सेवा हो रही है। पता नहीं है यह हमारे कपड़े, हमारा खाना सब कैसे हो रहा है, कौन कर रहा है और कौन करा रहा है? करावनहार करा रहा है, करने वाले करके अपनी कमाई कर रहे हैं। ऐसी कमाई करने के लिये ही यहाँ सब बैठे हैं ना। सिम्पल रहकरके हरेक सैम्पल बन गये हैं। जब भी किसी को देखती हूँ ना तो एक एक वन्डरफुल है।

13-12-16

दादी जानकी जी और ईशू दादी की आपस में चिटचैट

सभी प्यार से तीन बारी ओम् शान्ति बोलो। अभी हम सबका एक है बाबा का घर परमधाम, फिर यहाँ शान्तिवन में बैठे हैं तो तन यहाँ है, मन कहाँ है? परमात्मा बाप का जो घर है वो मेरा भी घर है, सभी को यह फीलिंग आती है ना क्योंकि बाबा ने अपना बनाके हमको भी मुस्कराना सिखा दिया, परन्तु आप सबको यहाँ मुस्कराता हुआ देख, यह त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक हैं ऐसी फीलिंग आती है। सभी कहाँ रहते हो? किसके साथ रहते हो? हम अपने लिये कहूँ मैं कहाँ रहती हूँ?

जानकी दादी:- आजकल मैं जहाँ कहीं भी हूँ ईशू दादी वहाँ हाज़िर हो जाती है। यह बाबा की राइट हैण्ड होकर रही है। ऐसे है ना दादी!

ईशू दादी:- बाबा के सभी बच्चे राइटहैण्ड हैं ना। बाबा के अंग-संग रहते हैं।

जानकी दादी:- यह हमारी बहन है, सखी है तो यह सब आपको देख खुश हो गये हैं।

ईशू दादी:- हम शान्तिवन का चक्कर लगाने निकली तो यहाँ देखा दादी बैठी है और इतने सब हमारे भाई बहनें बैठे हैं तो मुझे भी आकर्षण हुई तो मैं यहाँ आ गयी। सभी को देख करके मुझे बहुत बहुत बहुत खुशी हो रही है। जानकी दादी :- दादी यहाँ आते हैं तो अच्छा लगता है, यहाँ पाँव रखने से धरती पर नहीं है, ऐसे लगता है। देवता तो सतयुग में बनेंगे, उसके लिये अभी हरेक को दैवी गुणों में सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बनने के लिये सबका अच्छा पुरुषार्थ है। आप कहती हो सिर्फ चक्र लगाने निकली थी फिर इस संगठन ने आपको खींच लिया ना।

जानकी दादी:- अभी शान्तिवन में रोज़ाना कोई न कोई जगह देखने का अचानक का प्रोग्राम चल रहा है तो यह सब खेल किसने रचाया, अपने आप सभी कुछ करके, करने वाला वही है, कौन? मेरा बाबा। और हमारे से भी कराने वाला कौन है? वह हमारा बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है। दिन रात बाबा को बाप के रूप में देखो या टीचर के रूप में या सतगुरू के रूप में, कितना अच्छा बाबा है। और हम कौन हैं? हमको भी बाबा ने भले प्यार से त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक बनाया है। हम यहाँ निमित्त मात्र हैं बाकी सूक्ष्मवतन, मूलवतन हमारा घर है। यहाँ स्थूल दुनिया में हम नहीं रहते हैं। कोई कोई आत्माओं को बाबा से मिलन का अनुभव नहीं होता है, और कई फिर अनुभव करते हैं कि हम जैसे बाबा के नयनों में बैठे हैं। तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे... कोई न जाने तुम्हारा अन्त ऊंचे ते ऊंचा भगवंत। अभी हम तो जानते हैं ना वो कौन है!

सभी हमारे को कैसे देख रहे हैं। मैं कौन, मेरा कौन... यह सभी जानते हो ना। संगमयुग पर बहुत अच्छा अपने आप बाबा करा रहा है, सिखा रहा है। यह सभी भाई बहनों के अन्दर से आवाज निकलता है मेरा बाबा। बाबा कहता है मेरे बच्चे।

ईशू दादी:- आज दिन में शान्तिवन का सारा चक्र लगाया, सब जगह गये थे, कितने अच्छे अच्छे बच्चे बाबा के बैठे हैं, खुशी में नाच रहे हैं तो हमें बड़ी खुशी हो रही है। तो आप भी सब बाबा के बच्चे इतने सब आये हैं और सारा दिन अपनी स्टडी में ही रहते हैं और कोई भी बातचीत नहीं, बस बाबा और मैं। बाबा के साथ ही सब बोल रहे हैं, खुशी में नाच रहे हैं, यह देखकरके हमें बहुत बहुत बहुत अच्छा लगा।

14-12-16

''देह सम्बन्ध से जितना न्यारे हैं उतना बाबा का प्यार ऑटोमेटिक खींच लेते हैं''

सभी भाई बहनें और कुछ नहीं तीन बारी ओम् शान्ति जरुर बोलो, मुझे कहना नहीं पड़े। जैसे एक गीत है ना बाबा, मुरली, मधुबन...। हम मधुबन में रहते हैं ना, साकार बाबा, चाहे अव्यक्त बाबा कमाल है इन दोनों की। गोद बिठाके गले लगाया फिर क्या पलकों में बिठाया, तो हर पल, हर टाइम मेरा बाबा। बाबा कहे मेरे बच्चे। हर मुरली में पहले-पहले बाबा कहता है मीठे बच्चे। हम भी कहते हैं बाबा अच्छा है आपने हमको मीठा बना दिया है। मैं समझती हूँ भाई चाहे बहनें, अन्दर ही अन्दर रात है चाहे दिन मैं कौन, मेरा कौन की स्मृति से अपने को देखें तो बहुत अच्छा लगता है। देह से न्यारे हैं, यह बहुत खुशी की बात है बाबा मेरा है। बाबा मेरा है यह किसको अनुभव है! बाबा मेरा है आप भी मेरे हो ना, भाई बहनें दोनों प्यारे लगते हैं। यह संगम का युग है, बाबा ने यज्ञ रचा तो किसलिए यज्ञ रचा। यज्ञ की सेवा भी कर रहे हैं, यज्ञ का खा भी रहे हैं। ऐसे ही नहीं खाते हैं, अच्छा लगता है कोई भी प्रकार की सेवा जरूर करनी है। जब साकार में बाबा थे तो हम बच्चों को इशारा करते थे, यज्ञ की कोई भी सेवा होती है वो जरूर करते रहो। अभी भी मैं समझती हूँ बहुत करके मातायें रोटियां

बेलती हैं ना, पकाती हैं ना तो कितना अच्छा लगता है। अगर कोई यज्ञ सेवा नहीं करते हैं तो अच्छा नहीं लगता है। यज्ञ बाबा ने रचा है और हम बाबा के बच्चों ने उसमें सारी लाइफ सेवा की है। तो शरीर को कभी कुछ होता भी है तो अन्दर में कोई दु:ख शरीर का नहीं होता। शरीर की थोड़ी बहुत खिटपिट हो फिर खड़ा हो जाये।

ईशू दादी:- ओम् शान्ति। अपने दैवी परिवार को देखकरके हमें तो बहुत-बहुत-बहुत खुशी हो रही है। ऐसा परिवार किसी का हो ही नहीं सकता। सारी दुनिया में हम ही नम्बरवन हैं जो बाबा के इतने बच्चे बाबा के साथ ही रहते हैं और बाबा के साथ ही सब कुछ करते हैं, तो यह कितनी खुशी की बात है। तो सदैव इस खुशी में नाचते रहो, कभी भी मुरझाना नहीं है, सदैव बाबा बाबा बाबा बाबा करते रहो। कोई भी सामने बात आवे तो मेरा बाबा, मेरा बाबा बैठा है तो बस हम निश्चिंत हैं। ऐसे ऐसे बाबा के ही गुण गाते रहो। बाबा को ही याद करते रहो। यह भी अच्छी बात है, जो शाम को यह संगठन मिलता है, दैवी परिवार अपने साथ मिलता है, तो कितनी खुशी की बात है। नहीं तो कोई किसको देखता ही नहीं है, लेकिन यहाँ तो संगठन में हम सब एक दो को देखते हैं और खुशी से सब सुनते हैं।

जानकी दादी:- हम बाबा के पास हैं या बाबा हमारे पास है इसलिए खुशराज़ी की जो मैगजीन निकलती है ना, वो बड़ी अच्छी है। मैं देखती हूँ हमारे भाई बहनें कैसे अच्छी अच्छी बातें निकालते हैं, वन्डरफुल है। अभी तक भी स्टूडेंट लाइफ है, हम बूढ़े नहीं हैं, स्टूडेंट हैं। पढ़ाई से बड़ा प्यार है। तो बाबा ने भी मुरली में याद किया है, मुरली में जादू है। यह मुरली में क्वेश्चन, धारणा सार, वरदान, स्लोगन अच्छा लिखत में मिलता है। तो यह जो स्टूडेंट लाइफ है ना, बाबा को अच्छा लगता है बच्चे औरों को आप समान बनाते जाओ। तो आप समान बनाने में लाइट हो जाते हैं फिर माइट बाबा देता है। मैं इस देह से, सम्बन्ध से न्यारी हूँ, जितनी न्यारी हूँ उतना बाबा का प्यार ऑटोमेटिक खींच लेते हैं। मेरा बाबा साथी है। दिन रात सोते जागते मैं देखती हूँ बाबा मेरे साथ-साथ है। .. फिर यह (हंसा बहन) कहती है तुम बाबा बाबा करती हो! फिर क्या करूँ बाबा, बच्ची सो जा राजकुमारी सो जा। हम राजकुमारी है ना। गीत भी कितने अच्छे हैं, जैसे बाबा का बनने से सुख बहुत मिला है। मैं पूछती हूँ सब भाई बहनों से कभी किसी को मेरे से दु:ख तो नहीं मिला है? न दु:ख देना, न लेना। सारी लाइफ कितनी भाग्यवान है! ब्लैसिंग हैं, यह ऑखें बड़ी अच्छी हैं, कुछ पढ़ना होगा तो मैं चश्मा उठायेगी बाकी ऐसे दृष्टि से देखने में ऑखें अच्छी हैं। यहाँ बैठके देखो कितना अच्छा लगता है।

15-12-16

''संगमयुग पर अच्छी क्वालिटी वाला बी.के. बनना है तो किसी से भी जैलिसी न हो, अभिमान का अंश भी दिखाई न दे''

ओम् शान्ति कहने में लगता है हम देह से न्यारे हैं। बाबा कहते हैं समझदार वो जो बाप समान बने और औरों को भी बाप समान बनाये। वो दिन अति प्यारे थे जब बाबा साथ हमारे थे। बाबा जब साकार में था तो वो क्या करता था, कैसे करता था वो तो सब हमने देखा सुना बताया, जब था तो वो बहुत अच्छा बाबा प्यार करता था क्योंकि हमको बाबा जैसा कोई दिखाई नहीं पड़ता था। बाबा इतना अच्छा है तो हम बाबा जैसा कैसे बनें! इसमें भी बाबा ने मुझे बहुत मदद की। और हमने भी दिल में बाबा को बिठाया है, दिमाग नहीं चलाया है। यहाँ भी कोई ऐसे होंगे जो दिल में बाबा को बिठा करके आराम से बैठे हैं। वन्डर है।

मुझे तो भाषण करना नहीं आता है परन्तु रूहानी भासना देने आती है। जिसको भी देखें तो यह बाबा का बच्चा है। साकार बाबा ने ही झाड़ और चक्र का चित्र बनवाया और हम लोगों को सिखाया, इसके पहले और

कुछ नहीं आता था, पर बाबा ने जो सिखाया मुरली में जादू भरा हुआ है। कोई कोई शाम के क्लास के पक्के नियमी हैं, मिस नहीं करते क्लास क्योंकि अच्छा लगता है। संगमयुग पर बी.के. भी सच्चा अच्छी क्वालिटी वाला बनना है। किसी से हमको जैलसी नहीं है, यह बना है मैं नहीं बनी हूँ यह अभिमान है इसलिये ऐसा चेक करना है जो अभिमान कभी भी हमारे आगे दिखाई नहीं पड़े। जहाँ जहाँ जिन देशों में मैं गयी हूँ उनको अनुभव है वो यहाँ आते हैं तो उनको याद आता है, मैं इनको वहाँ पर मिली थी। मैं कौन, मेरा कौन बाबा ने जहाँ जहाँ कदम रखवाया है उसमें अटेन्शन रहता है। तो बाबा समान बनना, यह जो लगन है ना वो काम अच्छा करती है। खुद को देखते हैं अच्छा है, बाबा ने मुझे ऐसा बनाया है।

मनोहर दादी जिसका नाम हरी था वो मेरी सखी थी, वह आप समान बनने में बहुत साथ दिया है और भी कई ऐसी अच्छी अच्छी जैसे दीदी है, दीदी ने भी मुझे आप समान बनने में बहुत साथ दिया क्योंकि वो खुद बाबा समान थी परन्तु अपने समान बनाने के लिये मेरे को साथी बनाया सखी के रूप से। हमारी आपस में जैलसी नहीं थी परन्तु बाबा जैसे बनाना चाहता है, ऐसा बनें, यह हम रूहरिहान मनोहर के साथ करते थे। मैं उस घड़ी उसको मनोहर दादी भी नहीं कहती थी, और मेरा पहले का अव्यक्त नाम मनोहर शान्ता था, उसका मनोहर था। परन्तु बाबा ने कहा मेरा नाम जानकी जो है ना ट्रस्टी और विदेही रहना है, यह मेरे बाबा ने नाम को काम दिया। सीढ़ी, झाड़ और चक्र का ज्ञान मुरलियों में सुनते हैं, जिससे यह भासना बाबा की हमेशा आती है जो निज ज्ञानी तू आत्मा है वो बाबा के समान बनते हैं और औरों को आप समान बनाते हैं। खुद बाबा के साथ है। बाबा ने क्या सिखाया है, वही सिखाते रहेंगे। सबसे पहले दीदी को ही सभी ने दीदी कहना शुरू किया था। उसके बाद ऐसी दीदी और कोई बनी नहीं है। भला इस सभा में दीदी कौन है बताओ हाथ उठाओ, कोई नहीं। चलो चक्रधारी बहन आप ही बताओ आप कैसे दीदी बनी हो और किसने बनाया? आप भी कितनी सेवायें करती हो पर न्यारी प्यारी है। ऐसे है ना। इन चक्रधारी जैसी कोई बहन है! आपको च्रक का ज्ञान बहुत याद रहता होगा ना। ईशू दादी आपको दादी किसने सबसे पहले कहा, याद है? मुझे किसी के नाम याद नहीं आते, पर यह मेरी आदत कहे या नियम कहे या मर्यादा कहें, मुझे सब अच्छे लगते हैं। कभी नहीं होगा यह अच्छा नहीं है। बाबा से सतगुरू के रूप में, बाप के रूप में, टीचर के रूप में जो पाया है वो अभी तक बहुत काम में आता है। तो दिल कहता है कि यह भी बाबा का लायक बच्चा बन जाये। लायक माना लाइट रहो, माइट खींचो। इज़ी है लाइट रहने से कोई बोझा नहीं, सेवा का भी बोझा नहीं है, भाग्य है। हमको कभी कोई उम्मीद नहीं थी कि मुझे भी दादी कहेंगे। गुल्जार दादी का पार्ट अपना है, दादी गुल्जार को बाबा ने बनाया है या बाबा से खींच लिया है प्रेरणा, अच्छी प्रेरणा खींची है।

ईशू दादी:- भाग्यविधाता के बच्चे हम सभी बहुत बहुत बहुत भाग्यशाली हैं, जो ऐसा बाप हमें मिला है, दुनिया में किसी को मिल ही नहीं सकता है। तो जितना हम अपना भाग्य बनाते हैं उतना उतना हमारा भाग्य बढ़ता रहता है। अपने पुरुषार्थ पर मदार है, दिन रात जब भी समय मिले एक बाबा दूसरा न कोई बस यह याद रहे, और और बातों में बुद्धि नहीं जावे। बस यह हमारा पक्का निश्चय रहे कि हम भाग्यविधाता के बच्चे हैं तो हमको एक बाप को ही याद करना है। देखो, बाबा की मुरली पढ़ते वा सुनते तो भी बाबा याद है। चलते-फिरते, भोजन करते हैं तो भी बाबा की याद रहे ताकि बाबा कभी नहीं भूलना चाहिए। बाबा ने यह भी सिखाया है, जब भोजन पर बैठते हो तो पहले बाबा को याद करके बाबा की याद में भोजन करो। ऐसे नहीं भोजन पर बैठे तो और और बातें करते रहें, यह भी बिल्कुल नहीं। तो यह हमें बाबा ने शुरू से लेकरके शिक्षा दी कि बाबा के साथ सदा अपना भाग्य बनाना है।

16-12-16

''हम सब एक दो के सच्चे मीत बन खुशी के गीत गाते हैं, श्रीमत सिरमाथे पर है इसलिए माथा ठण्डा है''

ओम् शान्ति कहने में कोई खर्च नहीं है, कमाई बहुत है। यह संगमयुग बहुत वैल्युबूल है इसलिये क्लास में जाना वो भी देरी से नहीं टाइम पर पहुँच जाना बहुत अच्छा है। आते ही इतना अच्छा गीत बजाते हैं तो और भी बहुत अच्छा लगता है। पहले तो फिल्मी गीत बजते थे तो किसी ने उल्हना दिया कि आप ऐसे फिल्मी गीत क्यों बजाते हो? तो बाबा ने ऐसे अच्छे गीत बनाने वाले, बजाने वाले बच्चों को कहाँ-कहाँ से खींच लिया। तो यह समय जो है ना वन्डरफुल है। बाबा को जानना, बाबा की याद में गीत गाना अगर मैं नहीं गा सकती हूँ तो आप गाओ, मैं सुनूँ। बाबा की पहचान जो मिली है, कहाँ बाबा कहाँ हम, एक दो को देखते हैं तो भी दिल कहता है बाबा को पहचान करके बाबा के गीत गायें। हम मिलकरके गीत गायें क्योंकि बाबा संगम पर आता है हमारे पास। मैं तो कहेगी 80 साल पहले जब शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया, तो मैं यह देखकरके बड़ा खुश हो गयी। यह कहाँ से आया है, बाबा को बहुत लाइट लाइट देखा। बाबा लाइफ में एवरीथिंग राइट रहा है। जितना योग लगाओ ना, लगायें या न भी लगायें पर बाबा बहुत खींचता है। समय ऐसा है बाबा खींचता है, गाओ खुशी के गीत, हम हैं एक दो के मीत... कितने अच्छे हैं मीत। जितना एक दो के मीत बनते हैं, मुझे तो सभी मीत लगते हैं। संगमयुग में जितना हम बाबा को अपना बनाये उतना बाबा खुश हो जायेगा। हमारे बिगर क्या करेगा बाबा, हमको ऐसा बनाने में बहुत अच्छा फायदा दिया है। मैं तो कहेंगी श्रीमत सिरमाथे पर है इसलिये माथा ठण्डा है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को अपना बनाके और ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को अपना बनाके यह एक खेल बनाया है। इस खेल में कितने अच्छे बाबा के बच्चे हैं। अच्छा लगता है, हम सब एक दो के मीत हैं इसलिये शान्ति, प्रेम के साथ खुशी के गीत गा रहे हैं। प्यार कभी थोड़ा नहीं भी हो सकता है क्योंकि मैं जो चाहूँ सो नहीं होता है, तो वो जो चाहे मुझे करना पड़ता है, तो थोड़ा प्यार कम हो जाता है परन्तु हम कहेंगे अच्छा है। बाबा सीढ़ी का चित्र दिखाके मुरली में समझाता है कि सीढ़ी उतरते नीचे उतर आये तो फिर चढ़ें कैसे? बाबा ने अभी यह बहुत अच्छी नॉलेज दी है जो हम मुख से कुछ नहीं कहके, हम कौन हैं किसके हैं, क्या कर रहे हैं वो प्रैक्टिकली दिखा रहे हैं।

ईशू दादी:- बाबा कहते हैं यह तुम ब्राह्मण बच्चों की ईश्वरीय सभा है। तो ईश्वरीय सभा में सभी कितने हर्षितमुख हैं, सब ताली बजाते हैं खुशी में। बस बाबा ही बाबा दूसरा न कोई। बाबा की याद, ब्राह्मण बैठे हैं ना, यहाँ कोई शूद्र आ ही नहीं सकता है। आज हमें बाबा की फुलवाड़ी को देखकरके बहुत बहुत बहुत खुशी हो रही है। बाबा भी बच्चों को देख बहुत-बहुत खुश हो रहा है। कदम कदम श्रीमत पर ही हम चलते हैं।

17-12-16

''बाबा ने माताओं बहिनों को निमित्त बनाया है तो निर्माणचित रहना है, ऐसा क्वालिटी वाला बनना है जो सब कहें इनको ऐसा बनाने वाला कौन'' (महिला कॉन्फ्रेस में)

माताओं का संगठन देख हमें बहुत खुशी हो रही है। विश्व परिवर्तन के कार्य में बाबा ने कैसे माताओं को आगो रखा है। मैं जब से बाबा की बनी तो आदि से लेकरके यही नशा चढ़ा हुआ था कि मुझे क्या करना है! हम सबके दिल में सेवा की भावना ऐसी है जो सेवा के बिना रह नहीं सकते। मैं तो बाबा की कमाल गाती हूँ, विदेश में भी कोई देश नहीं रहा जहाँ पांव नहीं रखा हो। जबकि उस समय मेरे पास न कोई पर्स, न पैसा था, अभी भी नहीं है, सफेद कपड़ा खीसा खाली हम हैं सारे मुल्क के वाली। अभी इतना बाबा ने साथी बनकर शक्ति दी है

साकार में भी दी है, अव्यक्त में भी दी है, यह मैं दिल की बात सुनाती हूँ। बाबा आपने हम बच्चों को निमित्त बनाया है, तो निमित्त बनके निर्मानचित रहना है।

मेरी बहनें, मातायें आज का दिन कितना महान है सुबह अमृतवेले से लेकरके मुझे खुशी हो रही है। बाबा ने मुझे अपना बनाके ऐसी शक्ति दी जो सारे विश्व की सेवा करते कभी बोझ महसूस नहीं हुआ, भारी होके नहीं किया है। माताओं को थोड़ा सेवा का बोझा हो जाता है लेकिन यहाँ बाबा ने वो भी सहज कर दिया है। न्यारा रहने से प्रभु प्यार करता है। यह प्रभु की लीला कितनी सुन्दर है। देखो, यह कितना अच्छा माताओं बहनों का मेला है क्योंकि बाबा ने निमित्त बनाया है। तुम बनेगी तेरे को देख और बनेंगे। कोई मेहनत नहीं है। पहले हम ऐसे बनें, इसमें पुरुषार्थ है बाबा तू मेरा, मैं तेरी इससे ही निमित्त बनें। बाबा कहे तू मेरी है, मैं कहूँ बाबा तू मेरा है। बाबा ने पहले अपना बनाया फिर ऐसी क्वालिटी का बनाया जो विश्व भर में हरेक आत्मा की दिल से यही निकलता है इनको ऐसा बनाने वाला कौन! हम सबकी दिल में है कि दुनिया में कोई भी आत्मा है, बिचारी दु:ख दूर करने वाले, सुखों से सम्पन्न बनाने वाले बाबा को याद करे। मनमनाभव के मंत्र का प्रैक्टिकल रूप हो। यहाँ मंत्र मुख से जपा नहीं जाता है क्योंकि यह मंत्र ऐसा है जो बाबा खुद कहता है मामेकम् माना मुझ एक को याद करो। हाँ बाबा, हम समझ गये। हम एक की याद में रहेंगे तो आपस में एकता से रहेंगे। नहीं तो माताओं को एकता में रहना थोड़ा सहज नहीं लगता है, अभी बाबा ने हम सबको ऐसा लायक बनाया है, जो खुशी जैसी खुराक नहीं और चिंता जैसा मर्ज नहीं है। ऐसे है ना खुशी जैसी खुराक नहीं इसलिये हम चिंता कभी नहीं करते हैं, चिंता न करने से व्यर्थ चिंतन भी नहीं होता है। तो इसमें खुशनसीब वो हैं जो चिंता से मुक्त है, हर्षितमुख हैं।

17-12-16

हम सब बेफिकर बादशाह है, कोई फिकर नहीं, कोई चिंता नहीं, कोई चिंतन नहीं, क्योंकि हर एक सीन, साक्षी होकरके देखते हैं, ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल गया है,

गीतों में भी यही कहते हैं बाबा हमारे नयनों में है। मैं कौन, मेरा कौन.. यह दो बातें हैं तीसरा जब सभा में आते हैं तो आप सबको देख यही निकलता मैं कौन, मेरा कौन.. सारा दिन यह कभी भूलता नहीं है। मैं जिसकी हूँ वो बहुत न्यारा है और अपना प्यारा बना दिया है क्योंकि न्यारा बनने से बाबा बहुत अच्छा लगता है। देह के सम्बन्ध से कोई कहे यह मेरी बेटी है, ना ना न्यारे हैं, प्यारे हैं। एक दो में प्यार है परन्तु न्यारे हैं, मुझे पता है बहुत अच्छे हैं, अब सभा में जो भी बैठे हैं ना, सम्बन्ध में होते न्यारे हैं। भले कहेंगे हमारा भाई, हमारा बाप, हमारी माँ यह है, परन्तु सभी बड़े सच्चे दिल वाले हैं। कोई किसी में लटके चटके नहीं हैं, फ्री हैं। हरेक को बाबा ऐसा बनाता है, तुम मेरे बच्चे हो ना, जी बाबा। कहाँ रहते हो बाबा हमारे दिल में हैं, हम बाबा के दिल में हैं तो दिमाग में और कोई बात नहीं है। दिल और दिमाग से बाबा का प्यारा बनने में और कोई रूकावट नहीं है, देह के सम्बन्ध में न कहीं अटके हैं, न कहीं चटके हैं। समझा।

यह हमारी ईशू दादी भी कहीं कभी ऐसे लटकी चटकी अटकी नहीं है। यह तीनों ही नुकसानकार है। मैं सभी को याद में बैठे देख रही थी तो सभी कैसे फ्री हैं! इतनी मीठे हैं, इतने अच्छे हैं। जो कहीं अटके, लटके, चटके नहीं हैं ना, तो उनको कुछ नहीं चाहिए। बाबा ने चाहिए चाहिए से छुड़ा दिया है। मैंने कभी किसको कहा नहीं है कि मुझे यह चाहिए। क्या चाहिए, सब कुछ है। जहाँ जाओ जिससे भी मिलो कहेंगे कुछ चाहिए तो हाथ ऐसे हो जाते हैं। पता नहीं मेरा हाथ ऐसे खुश है।

खुश कौन रहता है? जो बेफिकर बादशाह है, कोई फिकर नहीं, कोई चिंता नहीं, कोई चिंतन नहीं, तो क्या

है बाबा मैं आपकी हूँ ना, यहाँ जो बाबा ने ज्ञान दिया है, साक्षी होकरके देखो तो तीसरा नेत्र खुल गया है, तो यह दोनों ऑखे बड़ी अच्छी हो गयी है। सारे विश्व में बाबा ने सेवा कराई है परन्तु चाहिए चाहिए नहीं है, इससे बहुत फायदा हुआ है। ऐसों को देख बाबा कहेगा मेरा बच्चा, हम कहेंगे मेरा बाबा, तो खुश हो जाते हैं। भगवान स्वयं कहे तू मेरा है तो क्या समझा है! और हम बच्चे भी कहते हैं तुम भी मेरा है। दोनों एक ही जगह के रहने वाले हैं फिर सुखधाम में आने वाले हैं। तो अभी परमधाम में बाबा के साथ रहने में सहज है, अच्छा है कभी कहता है तुम क्या करती हो? बाबा मेरा टीचर और सतगुरू भी है ना, तो मैं कौन हूँ? उसका बच्चा हूँ, स्टूडेन्ट हूँ, उनकी श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा बनने वाली तब तो दुनिया को देख मैं खुश होती हूँ और दुनिया मुझे देख खुश होती है क्योंकि कभी कोई बात में मूँझते नहीं है, किससे पूछते नहीं है कि कहाँ जाऊं, कैसे जाऊं और क्या करूँ? ऐसा क्यू में खड़ा नहीं होते। क्यूं (क्वेश्चन) बड़ा डिफीकल्ट है और फुलस्टाप सहज है परन्तु एक पहले फिर दूसरा बिन्दी, फिर तीसरी बिन्दी ऐसे बिन्दी लगाते जाओ। क्वेश्चन नहीं है। अगर क्वेश्चन ऐसे किया तो क्यू में खड़े हो जायेंगे इसलिए बाबा ने यह युक्ति सिखलाई है, क्यू में खड़े नहीं होना है, थक जायेंगे। कहाँ जाऊं, कैसे जाऊं, सदा ही मूँझा हुआ लगेगा। बड़ा इज़ी लगता है जब मेरा बाबा कहा तो बाबा ऑखों के सामने आ जाता है। मैंने साकार बाबा को देखा, उनसे सीखा है जब तक शरीर में आत्मा है तो मुझे विकर्माजीत, कर्मातीत फिर अव्यक्त स्थिति में रहना है। ऐसा था हमारा बाबा, जैसे शरीर में है ही नहीं इसलिये बाबा बहुत अच्छा लगता था। अभी भी उनसे वही प्रेरणा मिलती है कि तुमको विकर्माजीत बनना है। इसके लिये बाबा से सच्चे होकर रहो, कइयों को बाबा के सामने सच बोलने से डर लगता है। लेकिन सच बोलने से सच्ची दिल पर साहेब राज़ी फिर क्या करेगा काज़ी। हम सच्चे हैं तो किसका डर नहीं। नहीं तो कइयों को डर लगता है इसलिये सच्चा होकर रहना। हमको तो कोई डर नहीं है, जन्म से ही यह अलौकिक जन्म है ना। बहुत कमाई करने का है, यह अच्छी कमाई है। एक बाबा लगाओ बिन्दी, समझा राइट है ना। ऐसे नहीं पहले बिन्दी फिर बाबा। नहीं। पहले बिन्दी लगायेंगे फिर बाबा कहेंगे तो यह अक्ल का काम नहीं है। इज़ी बात यही है कि एक बाबा है तो कुछ नहीं चाहिए। फिर हाथ ऐसे हैं। बाबा ने ऐसा समझदार बनाया है जो अपने को भी देख, बाप को भी देख फिर सबको भी देख तो खुशी जैसी खुराक नहीं है। बाकी कोई न चिंता है, न चिंतन है।

ईशू दादी:- भाग्यविधाता प्यारे बाबा के हम बहुत बहुत प्यारे बच्चे हैं, लाडले बच्चे हैं ऐसा बाप किसको मिल सकता है। हम ही महान भाग्यशाली हैं जो ऐसा बाबा हमें मिला है, जो दुनिया में कोई को नहीं मिल सकता है। तो सदैव इसी खुशी में नाचते रहो मेरा बाबा, बाबा मेरा, बाबा बाबा... करते हो। हम सब बाबा के बच्चे आपस में भाई बहनें हैं। अच्छा।

18-12-16

''बाबा को सखा बना लो तो श्रीमत पर चलना सहज है, उसी की कम्पन्नी में रहो और उसे अपना कम्पैनियन बना लो''

गीतः तुझ में रब दिखता है... जैसे ब्रह्माबाबा शिवबाबा के बिगर कहाँ किधर भी नहीं जाता है, वैसे ही सारे विश्व में वह हमारे साथ चला है इसलिये जान बूझकर यह गीत बजाते हैं कि तेरे में रब दिखता है। उस रब को देखना हो तो मैं कौन हूँ, मेरा कौन है। सर्वशक्तिवान बाप वो मेरा हो गया है, मैं क्या करूँ। बाबा से जो मिलता है, उसका अनुभव बहुत अच्छा होता है, जैसे ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को कम्पैनियन बनाके रखा है तो हमारे लिये भी सहज रास्ता हो गया है। उसकी कम्पनी में रहने से उसको कम्पैनियन बनाने का मुझे बहुत पुराना अच्छा

अनुभव है। उस दिन से लेके बाबा ने सखा के रूप का अनुभव कराया है इसीलिये जो भी मुझे देखता है वह बाबा को सखा के रूप में अनुभव करता है। सारे विश्व में जहाँ भी जाओ यह अंगुली सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मत बच्चे की मदद बाप की, ऐसे है ना। बाप की मदद वन्डरफुल है। हम कभी भी अकेले नहीं है। बाबा को सखा बनाकर श्रीमत पर चलते चलो। सखा रूप में रहने से उसकी श्रीमत बड़ी अच्छी लगती है। माँ बाप तो लौकिक है परन्तु अभी बाबा से माँ, बाप, शिक्षक, सखा, सद्गुरू सबकी भासना आती है । पहले माँ फिर बाप, बाप को याद करते हैं उसमें मनमनाभव, मामेकम् वो फिर बाप हुआ है ना और यह बाप ऐसा है अभी अभी बाप है, अभी अभी सखा और सतगुरू है।

ईशू दादी:- हम कितने भाग्यशाली हैं जो बाप, टीचर, सतगुरू तीनों की हम पालना ले रहे हैं। कितनी खुशी हो रही है! और हम सभी बच्चों को बाबा कहते हैं कि सदैव खुशी में नाचते रहो, कोई भी इधर उधर की बात को छोड़करके बस एक बाबा, मैं बाबा का बच्चा इसी खुशी में सदैव नाचते रहो, खाते रहो, घूमते रहो। खाना-पीना जो कुछ खाओ तो बाबा को याद करके खाओ तो यह भी बाबा की बहुत हमें अच्छी श्रीमत मिली है कि बाबा को कभी नहीं भूलना है।

21-12-16

जब सभी प्यार से ओम् शान्ति बोलते हैं तो यहाँ सभी की हाज़िरी दिखाई देती है। अगर नहीं बोलते हैं तो संकल्प चलता है कि कहाँ हैं इसलिये मेरे को तो संगठन में आने से बहुत-बहुत खुशी होती है। समय पर अपने सीट पर सेट होना माना अपने को लायक समझके मैं कौन हूँ, मेरा कौन हूँ.. उसी अनुभव में खो जाना।

सतयुगी दुनिया में जाने के लिये कोई कोई आत्मायें पहले ऐसे चली गयी, जब मैं उन आत्माओं को देखती हूँ या याद करती हूँ तो वो भी हाज़िर हो जाती हैं। यह फीलिंग किसको है कि पूर्व जन्म में भी मैं बाबा के पास थी और अब भी बाबा के पास हूँ, कौन है ऐसा? (विदेश की शिवानी बहन से) तुम क्यों यहाँ आयी हो? इसके माँ बाप आवे या नहीं यह आ जाती है। लण्डन के बाबा भवन में भी हाज़िर होती है। तो क्या भासना आती है? मैं कौन हूँ, मेरा कौन हूँ.. यह है ना! क्योंकि यह पूर्वजों का संस्कार ऐसा लायक बना देता है और यह कभी भी पीछे नहीं बैठेगी। ऐसों के दिल से निकलता है मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। ऐसी रौनक वाली सभा की शोभा कभी कहीं देखी थी, किसी कंट्री में। मैंने भी सभी जगहों पर चक्कर लगाया है पर ऐसी सभा देखने को कहीं भी नहीं मिलती है। बाबा ऐसे काम करता है, ऐसे हमको पैदा करता है, बच्चे पैदा करने में बाबा बड़ा होशियार है। इस सभा में 2-3 आत्मायें ऐसी बैठी हैं जिनसे यह भान आता है कि यह फलानी आत्मायें हैं। गयी थी फिर वापस आकरके अपना पार्ट बजा रही हैं। सबका अपना अपना पार्ट है। जैसे हाथ की पाँचों अंगुलियों का अपना अपना महत्व है। ऐसे यहाँ भी हर एक का अपना महत्व है। जिसके संकल्प दृढ़ हैं उन्हें कैसे भी काम में सफलता अवश्य मिलती है।

22-12-16

''ऊंच पद पाना है तो साकार बाबा जैसी अपनी एकरस स्थिति बनाओ, नस नस में एक बाबा की याद समाई हो''

ईशू दादी:- भाग्यविधाता के हम बच्चे कितने ऊंच बाबा के बच्चे हैं, बाबा हमारा हम बाबा के। बाबा रोज़ हमें कितना प्यार से सब कुछ सुनाता है, हम प्यार से उसको धारण करते, उड़ते रहते हैं। तो कितनी खुशी होती है, दुनिया के लोग तो क्या करते हैं लेकिन हम प्यारे बाबा के बन गये तो बाबा हमारी सारी परवरिश भी करते हैं।

बाबा हमें पढ़ाता भी है, बाबा हमें सिखलाता भी हैं, सबकुछ बाबा करते हैं, इसलिये हम खुशी में नाचते रहते हैं। बाबा ने हमें एकानामी का बहुत अच्छा पाठ सिखलाया है, पहले पहले जब सभी आये थे ना तो घड़ियां पहनते थे, चुड़िया पहनते थे, बहुत फैशन... बाबा ने एक दिन कहा कि यह सब छोड़ो तो छूट जायेंगे, नहीं तो इसमें भी मोह रहता है। तो कोई कोई तो घड़ी के सिवाए चल ही नहीं सकते थे। तो बाबा ने कहा सभी से घड़ियां ले लो, तो सभी ने दे दी लेकिन बाबा ने मुझे कहा आप अपनी घड़ी रखो क्योंकि मैं आपसे ही टाइम पुछूँगा। अभी वो घड़ी मेरी ऐसी है जिसमें सेल नहीं पड़ता है, नस पर चलती है तो यह भी एकॉनामी हो गयी ना।

रूकमणी दादी:- बाबा हमारे को रोज़ नया-नया पाठ पढ़ाता है, आज भी बाबा ने यही कहा है कि कैसे उठते ही बाबा को गुडमार्निंग करो। गुडमार्निंग करते ही सारा दिन अटेन्शन रहता है, मैंने देखा आज की मुरली से सारा दिन यह अटेन्शन दिया तो हरेक बात में गुड गुड होती जाती है। बाबा से गुडमार्निंग करना माना हमें यह अटेन्शन देना, तो मेरा जो भी बीते चाहे संकल्प बीते, चाहे कर्म में आओ, चाहे वाणी में आओ, किसमें भी आओ वो गुड गुड है या नहीं? तो हमने देखा बाबा की मुरली का एक शब्द भी याद रहता है और उस पर अटेन्शन रखते हैं तो सारा दिन अच्छा बीतता है। तो मैं मुरली सुनने के बाद एक शब्द पकड़ती हूँ कि आज बाबा हमारे से क्या चाहता है, जो चाहता है हम करें, तो मेरा यही आज रहा जो बाबा ने कहा कि उठते ही यह संकल्प आवे गुडमार्निंग बाबा। तो गुडमार्निंग बाबा माना हरेक को यह फीलिंग आवे, तो हमारा संकल्प, वाणी, कर्म, जो भी कुछ है, सब सफल हो जाता है।

आजकल तो पढ़ाई की हमारी यह लास्ट पिरेड चल रही है, 80 साल पूरा हुआ है, अब यह 81वां शुरू होगा। तो लास्ट पिरेड में हमेशा यह रहता है, अभी पेपर के दिन हैं, तो लास्ट में हम अपने सारे पेपर्स को रिवाइज करते हैं और हमारा पेपर है हमारी मुरली। तो मुरली में जो कुछ आवे उसको रिपीट करके और अपने को चेक करते जायें तो हमारा सारा दिन कैसे बीता? तो आज मेरा अटेन्शन सारा यही रहा कि मेरा हर बात गुड गुड होवे यह है हमारा आज का पुरुषार्थ।

एक बार यह देखा हम सब बॉम्बे में थे, तब पहली प्रदर्शनी शुरू हुई थी, तो वो पूरी करके हम बाबा के पास आये थे। उस समय सारी बड़ी-बड़ी दादियाँ सब इकट्ठे थे और सब सज-धज करके बड़े फुल फोर्स में आये थे। बाबा गद्दी पर बैठा था और हम बाबा के चारों तरफ बैठे थे, तो बाबा हर एक को देखता ही रहा... तो बाबा के तो देखने में, बोलने में भी रहस्य तो होता है। बाबा के बात-बात में रहस्य होता है। तो हम सब अन्दर ही अन्दर अपने में सोचने लगे कि बाबा हम लोगों को इतना ऐसे कैसे देख रहा है, क्यों देख रहा है! तो हमने देखा हमें वो बॉम्बे का नशा था और वहाँ प्रदर्शनी करके आये थे, उसमें हमने देखा कि हमारे अन्दर के संकल्प बाबा के पास कैसे पहुँचते हैं, तो बाबा को हमने कहा कि बाबा आप क्या देख रहे हैं? तो बीच में दीदी बोली, बाबा बताओ ना आपके अन्दर अभी क्या चल रहा है? आप जो हम एक एक को देख रहे हैं, जरुर कुछ सोच चल रहा है तो वह बताओ। तब बाबा मुस्कुराने लगा और कहा नहीं, बहुत अच्छा समाचार सुनाया और सुनाओ, क्या हुआ, कैसे कैसे हुआ। दीदी कहे नहीं बाबा आपके अन्दर जो पहले बात है ना वो सुनाओ। तो हम सब जो थे सब बड़े बड़े थे और बड़े ही सज़धज़ के बैठे थे। तो बाबा ने कहा कि मैं देख रहा हूँ मेरे बच्चे कैसे अभी बहुत अच्छी सेवा करके आये हैं। दीदी फिर भी कहे बाबा अभी भी आपके अन्दर में कुछ है। हुआ क्या था कि बाबा का हम सभी पर ऊपर से लेकर नीचे तक अटेन्शन जा रहा था, बाबा देख रहा था इन बच्चों के अन्दर कुछ है, वो बाबा ने रीड कर लिया था कि कितना हम सब बन ठन करके आये हैं। तो बाबा ने कहा कुछ नहीं पर फील

हो गया। अपने आपेही फील होता था, बाबा बोले या ना बोले, अपने आप अन्दर आ जाता है कि अभी बाबा मेरे से क्या कराने चाहता था। हमको फील हो रहा था तो यह जो हम अभी तैयार होके, अच्छे अच्छे कपड़े पहनके और अच्छी तरह से बाबा के आगे आये हैं, यह बाबा को ठीक नहीं लग रहा है। तो हम सब आपस में एक दो को ऐसे ऐसे करते गये। मेरे को वो सीन सारी याद है। तो सभी ने क्या किया अपने आप... बाबा ने कुछ नहीं कहा। सभी के हाथों की जो घड़ियां थी वो सब घड़ियां उतारके बाबा की गद्दी के नीचे रखते गये। कईयों को चश्मे भी पड़े हुए थे, तो वो भी उतार रहे थे। तो बाबा को कोई भी बात करानी होती थी तो मुँह से बोलता कुछ नहीं था, परन्तु ऐसे ही नमूने दिखाता था जिससे हमारे में जो कोई कमी हो वो निकल जाये। तो हमने देखा उस दिन के बाद हमारी घड़ियां और थोड़ा बहुत जो बनठन के रहने का था, वो सब छूट गया। और चश्मे पर भी जो फ्रेम अच्छा हो, यह हो..। तो मन के संकल्प बाबा रीड कर सकता है ना। तो वह त्याग का दिन है। तो ईशू की बात सुनके मेरे को वो सीन वह दिन और वह रूप याद आया।

जानकी दादी:- वन्डर है दोनों दादियां यहाँ बैठी हैं, तो मैं अभी क्या बोलूँ, क्योंकि यह मेरे से बहुत होशियार हैं। बाबा कहते सबके साथ मीठा बोलने से बहुत सुख मिलता है। जो समझते हैं मैं बाबा के साथ रहने का भाग्यवान हूँ, तो न्यारा रहना है, सबको सहयोग देना है पर न्यारा रहना है। नि:स्वार्थ भाव हो, कोई स्वार्थ नहीं। बाबा ने कहा विष खाने वाले बहुत खराब होते हैं और कोई ने अगर थोड़ा भी क्रोध किया तो गई इज्जत, किसी के भी दिल में स्नेह नहीं रहेगा। हमारा एक दो से मोह नहीं, मोह खराब है। लोभ नहीं, नहीं तो चीज़ें सम्भालना पड़ता है। बाबा ने ऐसा सिखाया है, सारी दुनिया में चक्र लगाया होगा पर कभी कहीं कोई शॉपिंग नहीं की होगी, एक तो मेरे पास पैसा नहीं है और खरीदके क्या करेंगी? आजकल दुनिया में चमड़ी के साथ दमड़ी को भी देखते हैं। साकार बाबा जैसी सदा एकरस स्थिति हो तब ऊंच बनेंगे। कहता है शिवबाबा इस रथ में बैठ सेवा करा रहा है। इसमें ड्रामा की नॉलेज बहुत यूज़फुल है, नेचुरली है। बाबा की याद आती है। तो देह के सम्बन्ध से न्यारे बाबा के प्यारे बनने का बहुत फायदा है।

23-12-16

''बाबा ने दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार नहीं कराया पर दृष्टि ही दिव्य बना दी, बाबा की दृष्टि महासुखकारी''

(स्टेज पर गुल्जार दादी, जानकी दादी, रतनमोहिनी दादी, रूकमणी दादी, ईशू दादी बैठे हैं)

सभी मुस्कराते ओम् शान्ति बोलो, हर दिन होवत न एक समान, पर आज का दिन कितना अच्छा है, ऐसे कभी नहीं हुआ, वन्डरफुल बाबा वन्डरफुल बाबा के बच्चे और वन्डरफुल मेरी दादी। सभी के चेहरे देखो कितने खुश दिखाई दे रहे हैं। तो एक है मैं कौन, हाथ यहाँ रखो, दूसरा मेरा कौन, हाथ ऊपर करो और यह सब कौन है! मेरे बहन भाई हैं। जो समझते हैं मेरी लाइफ बहुत अच्छी है वो हाथ उठाओ। हम खुशनसीब हैं जो ऐसे बड़े हमको अपना बनाके इतना प्यार इतनी पालना दे रहे हैं।

आज का यह दृश्य बड़ा सुन्दर है। निश्चय बुद्धि और निश्चिंत रहना, मैं समझती हूँ किसको भी कोई फिकर नहीं है, सब निश्चिंत हैं। तो यह मुझे अच्छा लगता है। मैं कौन हूँ, किसकी हूँ वो कौन है? बस उसको जाना तो सबको जाना। आजकल छोटे, बड़े, बुढे, बूढी, मातायें जो भी हैं सबके पास मोबाइल होगा लेकिन हमारे पास न मोबाइल है, न चलाने आता है। बाबा ने साक्षात्कार दिव्य दृष्टि से नहीं कराया, पर दृष्टि ही दिव्य बना दी। समझा मेरी बात दृष्टि ही महासुखकारी बना दी। जैसे बाबा की दृष्टि में बहुत सुख है। शुरू से लेकरके मुझे तो

बाबा ने बहुत अच्छी पालना दी और फिर अव्यक्त होकरके भी हमको विकर्माजीत कर्मातीत बना रहा है। फिर व्यक्त से अव्यक्त स्थिति बनाने के लिये बाबा अपना संग दे रहा है। यज्ञ का अन्न पेट में जा रहा है, इससे हम क्या से क्या बन रहे हैं। बाबा ने भले हमसे सारे विश्व की सेवा कराई है परन्तु वो भी बिगर पैसे। जो बीता सो ड्रामा, अभी क्या करने का है, इसकी बाबा ने शक्ति दी है।

24-12-16

''संगमयुग है तो पहले पीस है फिर लव है फिर ऑटोमेटिक हैपीनेस (खुशी) है, उस खुशी से सब राज़ी हैं''

सारे कल्प में हर जन्म में बाप माँ हरेक का अपना अपना है और यहाँ अभी हम सबका बाप एक है और जो बाप है वही माँ भी है। माँ ने हमको एडाप्ट किया, गोद का बच्चा बनाया और फिर बाबा ने जब गले लगाया तो हमारे जैसा भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, पदमापदम भाग्यशाली और कोई नहीं। पहले बाबा के बच्चे थोड़े थे, अभी तो लाखों हो गये हैं। यहाँ के वायब्रेशन वहाँ चले जायें, यह भावना है। सारे विश्व में बाबा के बच्चे हैं। कोई ऐसा देश नहीं रहा है जहाँ बाबा के बच्चे ना हो। हमारा एक बाबा है ना, तो खुशी बहुत है जो भी बाबा के बच्चे बैठे हैं, हरेक को नशा चढ़ा हुआ है मैं कौन, मेरा कौन... मैं तो बाबा की एक बेबी हूँ। बाबा का बनने में बहुत सुख मिला है। सुख, शान्ति, प्रेम और सच्चाई से सारे विश्व की सेवा करनी है। संगमयुग है तो पहले पीस है फिर लव है फिर ऑटोमेटिक हैपीनेस है, खुशी है। उस खुशी से सब राज़ी हैं। जो खुश है वो राज़ी है और जो राज़ी है वो खुश है। मैं समझती हूँ आप सभी खुशराज़ी हैं। सुबह जो मुरली सुनी उसको रिवाइज करना, रियलाइज करना क्योंकि मुरली रिवाइज करो तो रियलाइज़ होता है मैं कौन, मेरा कौन? तो नशे सभी में है नुकसान इस नशे में सदा सुख है। मैं कौन हूँ, किसकी हूँ का नशा और यह सब मेरे बहन भाई हैं। ऐसे बेहद परिवार के संगठन को देख सबको बहुत सुख मिलता है। नहीं तो अगर पुराने विकर्मों का खाता है तो ब्रह्माबाबा की आत्मा में धर्मराज भी बैठा है।

रतनमोहिनी दादी :- सदा अपने को ऐसा तैयार रखें जो हम निश्चित रहें। हमने कितनी कमाई की, यह सोचने की भी जरुरत न पड़े क्योंकि जब से बाबा मिला, शुरू से लेके बाबा ने कैसे हमें पालना दी, तब से ही हमारी कमाई शुरू हुई, जमा का खाता बढ़ना शुरू हुआ। तपस्या करते गये, सवेरे सवेरे उठकर के, रात को अकेले अकेले बैठकरके दो-दो घण्टे तपस्या में बैठते थे और ऐसा निरसंकल्प अवस्था हो, जिससे कोई भी बात नीचे ऊपर हो परन्तु हमें यह याद रहे जब ड्रामा अनादि अविनाशी है तो इसमें जो भी सीन आती है वो फिक्स है और वो हर कल्प रिपीट भी होगा इसलिए अभी भी हम सावधानी से स्वयं को सदा स्मृति स्वरूप बनायें और एक दो को भी इसी दृष्टि से देखें। शुरू में जब हम लोगों ने तपस्या की 14 वर्ष, बाबा के साथ यज्ञ के अन्दर ही रहते थे। बाहर तो बिल्कुल नहीं निकलते थे। रात को 12 बजे से लेकर सुबह को 5 बजे तक तपस्या में मस्त रहते थे। और बाबा मम्मा भी तपस्या में हमारे साथ बैठते थे। ऐसी साइलेंस होती थी जो बिल्कुल हिलेंगे नहीं क्योंकि शुरू में जो हम लोगों ने तपस्या की है उसका ही फल है, जो सर्व के प्रति आत्मिक दृष्टि, आत्मिक भावना रहती है। कोई कुछ भी कहता है, करता है, उनके कर्म हैं। हरेक अपने पूर्व कर्मों के वश भी है तो अपने को परिवर्तन भी कर सकते हैं। हम सबको बाबा ने 84 के चक्कर की नॉलेज दी है। वह चक्र अभी पूरा हो रहा है, अन्त में आकरके अभी परमात्मा का साथ मिला है। क्योंकि भगवान के महावाक्य हैं जब जब धर्म की अति ग्लानि होती है तब मैं गुप्त रूप में आकरके फिर से वो सत्य ज्ञान देता हूँ। इस सत्य ज्ञान से हमें आत्मा का परिचय मिला

जिससे वह आत्मिक स्थिति सदा बनी रहे। अभी भी तपस्या के प्रोग्राम कहाँ कोई रखते हैं, लेकिन रात रात भर संगठन में ऐसे साइलेंस में बैठे रहें, जरा भी चुरपुर नहीं, किसी प्रकार की थकावट नहीं। सभी का मन एकाग्र हो। बाकी ड्रामा माना भिन्न-भिन्न प्रकार के पार्टधारी, भिन्न-भिन्न प्रकार का पार्ट हरेक का अपना-अपना होता है। तपस्या करने से मन की एकाग्रता बड़ी सहज हो जाती है। भले अभी भी कुछ होता रहता है, प्रकृति का काम अपना है लेकिन मैं आत्मा प्रकृति की मालिक हूँ, आत्म-अभिमानी बनके रहना, दु:ख-सुख में समान रहना, मान की इच्छा न रहे। अपमान को अपमान न समझ करके हम अपने व्यवहार को ऐसा रखें जो सबसे हमारी एक ही रीति की प्रीत बनी रहे। इसके लिये मैं शुद्ध आत्मा हूँ, सर्वशक्तिवान परमात्मा की सन्तान हूँ, यही लगन लगी रहे।

आजकल तपस्या के लिये कहेंगे योग कैसे लगायें? मन एकाग्र कैसे हो? इसके लिए चलते फिरते अन्दर में यही धुन लगी रहे कि मैं आत्मा हूँ। इसी स्मृति से कोई के सामने जाओ तो अपनी दृष्टि वृत्ति सर्व के प्रति समान, हरेक अपने अपने कर्मों के अनुसार अपने कर्म करते हैं इसलिये किसके भी भाव स्वभाव को न देखकर सदा हम अपनी स्थिति को एकरस रखें, एक बाप की याद में रहें।

ईशू दादी:- देखो भाग्यविधाता बाबा के हम लाडले बच्चे हमारा बाबा कितना प्यारा है... जैसे सुना कि हम रात-रात को जागकरके तपस्या करते थे। वहाँ ही रहते थे, वहाँ ही भोजन मिलता था, बाहर किसी का मुँह भी नहीं देखते थे। बाहर निकलते ही नहीं थे, वहाँ ही भोजन करो, वहाँ ही तपस्या करो और हरेक की अपनी अलग गद्दी बनी हुई होती थी, उसी पर बैठते थे। कोई को झुटका नहीं आयेगा, अगर आयेगा तो सभी को पता तो चलेगा ना, तो ऐसे हम बहुत-बहुत खुशी से यह तपस्या रात्रि को करते थे और हल्के रहते थे।

रुकमणी दादी:- बाबा हमें जो रोज़ नया नया पाठ पढ़ाता है, अगर हम उसके ऊपर भी अटेन्शन देते हैं तो आज का पाठ बाबा ने पढ़ाया, कितनी अटेन्शन देने वाली बात थी कि कैसे पुण्य आत्मा बनते बनते फिर पाप आत्मा बन जाते हैं। तो ऐसा कर्म न हो जो पुण्य करते करते और ही डबल पाप हो जाये। बाबा की मुरली जब चलती थी, तो हमें यह पता पड़ जाता था कि आज बाबा ने किस मतलब से बात किया है, यह बात किस बात से आयी है, तो वो आने से जैसे डर लग जाता था। तो ऐसा कर्म हमारे से न हो जो पुण्यात्मा बनकरके और फिर पापात्मा बन जाये माना दान देकरके वापस लेना, यह पाप आत्मा बनना। तो कहने का भाव यह है कि बाबा की बात बात में बात है, कैसा रहस्य भरा हुआ होता है, यह सब सामने आने से भय लगता है शल मेरे से कोई ऐसा पाप न हो जो दुनिया में सभी देखें। तो आज बाबा की मुरली का पाठ था कि दान देकरके वापस लेना माना पुण्यात्मा से पापात्मा बनना, ऐसा कोई कर्म का संकल्प भी न आवे। हम हैं ही सब बाबा के, हमारे पास जो कुछ है हमने लाया क्या? कुछ भी नहीं, हमारे पास क्या है। तो अगर हम मुरली पर अटेन्शन देते हैं तो मैं समझती हूँ हम ऐसे करते करते, बाबा के नजदीक आकरके बापसमान बन जायेंगे। हमेशा हमें फॉलो फादर करते रहना है माना जो बाबा कहते हैं उसको करें, यह है अटेन्शन। पुराना माना पहले जो किया सो किया परन्तु अभी क्या करना है यह सोचकर करना। ओम् शान्ति।

26-12-16

''आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदारी से चलने में बहुत फायदा है, आज्ञाकारी माना जो बाबा के डायरेक्शन हैं, उस पर चलते रहें''

तीन बारी की ओम् शान्ति में सारी ज्ञान की बातें आ जाती हैं। आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बनना है तो ओम् शान्ति। पहला ओम् शान्ति आज्ञाकारी, दूसरा ओम् शान्ति वफादार, तीसरा ओम् शान्ति इमानदार। मन अगर बाबा में है ना तो तन बिचारा अच्छा चलता है, यह किसको अनुभव है, जिसका मन अच्छा है, तन में है परन्तु तन को भी मन अच्छा चलाता है। तो बाबा की जो आज्ञा है, बाबा आज्ञा मुख से नहीं करता है परन्तु पहले बाप है बाप माना वर्सा। मुक्ति और जीवनमुक्ति। बाबा ने वर्से में मुक्ति भी दिया है, बुरी बातों से निकम्मी बातों से फ्री हो गये। फिर जीवन में हैं तो भी मुक्त हैं, अच्छा कर्म करके बाबा का नाम बाला करते हैं। तो आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदारी से चलने में बहुत फायदा हुआ है। आज्ञाकारी माना जो बाबा के डायरेक्शन हैं, उस पर चलते रहें।

जब बाबा आता है तो तीन माइक रखते हैं ताकि ऐसे ऐसे ऐसे करें तो भी ठीक से सुनाई दे। ऐसा अच्छा लगता है, कोई से कोई अक्षर मिस नहीं होता है। भले मेरे कान सुनने के लिये थोड़ा थोड़ा परीक्षा लेते हैं, इसके लिये वहीं पर स्क्रीन पर हिन्दी में लाइव लिखत में आता रहता है सामने में। मैं बाबा को देख भी रही हूँ, तो साथ-साथ पढ़ भी रही हूँ, जो बाबा बता रहा है ना वो अच्छा लगता है। यह आज्ञाकारी बनने में बहुत सुख मिला है। दु:ख का नाम-निशान नहीं है।

मैं समझती हूँ जो भी मधुबन बाबा के घर आते जाते हैं, वो मुझे मुँह दिखाके मिले बिना नहीं जाते होंगे। मुंह दिखाना माना मैं कौन हूँ, मेरा बाबा कैसा है। मैं आत्मा तो हूँ पर आत्मा में मन बुद्धि संस्कार हैं, जो ज्ञान का पहला लेसन है, बाबा ने सिखाया वो क्या है, अपने को आत्मा समझने से बहुत समझदार यानी जो भी कुछ करेगा ना, एक्यूरेट होगा क्योंकि हम सब बाबा के बच्चे हैं, बच्चे कहलवा करके कर क्या रहे हैं, हरेक के चेहरे और चलन से दिखाई पड़ता है। यहाँ गुण चोर बनना अच्छा है इसलिये भले यह चोरी भी करो, पर सभी से गुण उठाओ। साकार में बाबा कहते थे कोई भी भूल करेंगे तो सजा मिलेगी क्योंकि इनके साथ धर्मराज है। हर पल, हर कदम में हमारी कमाई है। जो समझता है हर कदम में, हर सेकेण्ड में कमाई करना बाबा ने सिखाया है, जो औरों को बताया नहीं जाता है पर ऑटोमेटिक वो सीखते हैं। ऐसे हैं ना निर्मला दीदी! किसको बोलती हो मुझे फॉलो करो! नहीं ना, इसलिये ऐसा मिसाल बन जाओ जो सबको प्रेरणा मिलें।

कोई आत्मा बाबा की बहुत अच्छी मीठी थी, बाबा ने उसको कहा जब जाओ तो उसके लिये टोली लेके जाना। तो उसको वो भूल गया, टोली लेके नहीं गयी। तो जब गई तो बाबा ने पूछा उसको टोली मिली? तो कहा बाबा भूल गया। तो यह भी भूल है क्योंकि टोली में दृष्टि भी है, दृष्टि में सच्चाई है। और यह कई बार मैंने बताया है कि 5 रूपया या 5 डॉलर या 5 पाउण्ड कभी मेरे हाथ में नहीं है फिर भी बाबा ने सारी विश्व की सैर कराई तो यह किसकी कमाल कहेंगे? सच्चाई की या बाप की! सिर्फ कदम जहाँ भी रखो तो कमाई है, जिससे भविष्य सतयुगी महाराजा महारानी बनेंगे। उसके लिये इस जन्म में ऐसा पुरुषार्थ करना है जो सर्वगुण सम्पन्न बनना है। सर्व गुणों को धारण करने के लिये एक बाबा की याद हो। अभी ही हमें सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है इसलिए साकार बाबा ने लास्ट मिनट में सभा में बोला निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी। सभी ने सुना होगा, यह महावाक्य उच्चारण करके फिर दादी को अपने हाथ में हाथ देके अन्तिम विदाई ले ली। तो मैं भी कहती हूँ अपने को ऐसा सदा ही गुणग्राहक रहना।

अगर कोई एकानामी से और एकनामी एक बाबा के नाम से सेवा करेंगे, तो सेवा में भी कोई मेहनत नहीं लगेगी। दृष्टि, सूक्ष्म वृत्ति और स्मृति में एक बाबा दूसरा न कोई। यह मैं आप लोगों को बताती हूँ पहले स्मृति कहो या पहले वृत्ति

से दृष्टि बड़ी न्यारी प्यारी है। सब दिन होवत न एक समान और हर आत्मा होती न एक समान। मैं कहूँ यह अच्छा है, यह नहीं अच्छा है... यह भी गलती है। मैं इसको जानती हूँ, इसको नहीं जानती हूँ - मैं कौन हूँ किसकी हूँ? क्या कर रही हूँ? सबका मेरे में अटेन्शन है कि यह क्या कर रही है। तो जो साथी है वो बताता है। दरवाजा खुला है मिलन मनाने के लिये। सभी बहुत अच्छे हैं, आप कहेंगे ऐसी दृष्टि वृत्ति कैसे बनी? बाबा ने बनाई है पर हम बनें ना। आज्ञाकारी, जैसे बाबा ने जो सिखाया है जहाँ भी हैं यज्ञ का खाते हैं तो जिनका खाते हैं ना, जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी। तो पानी भी सम्भलके पीना है, तो वाणी अच्छी हो जायेगी। तो शानदार बनना है, रीयल बनना है, रॉयल बनना है तो सारे विश्व की सेवा नेचुरल हो रही है।

सारे विश्व में कोई न कोई बहुत अच्छे बाप समान बनने वाले बच्चे हैं, उन्हें बहुत खुशी होती है। बाबा कहते हैं एक बाप को देखो और पढ़ाई कितनी अच्छी है, उसको देखो। दिलवाला बाबा हमारे दिल में बैठ गया है। सभी अपने दिल को देखो, सबको पता है ना मेरा बाबा कौन है? निराकार शिवबाबा, ब्रह्माबाबा कहता है उसको याद करो और शिवबाबा कहता है इसको फॉलो करो। समझा।

29-12-16

''दिल में दिलाराम बैठा है और दिमाग में बाबा ने जो सिखाया है वह रिवाइज हो रहा है''

इस सभा में आप सबसे इकट्ठा मिलने का चांस मिलता है तो दिल कहता है बाबा आपने वन्डर किया है। यहाँ एक एक आत्मा हीरो एक्टर भी है, हीरे मिसल भी है। सभी हीरो पार्ट बजाने वाले चमकते हुए नज़र आते हैं। भगवान ने ऐसे इशारों से चलाया है। हम सबको भगवान और भाग्य को देख मुस्कराना आ गया। कैसी भी बात सामने आती है, बात आयेगी चली जायेगी, हम मुस्कराते रहेंगे। अभी कई आत्माओं को देखा है जो पहले कितने समय से नहीं मिले थे, वो आके मिलते हैं तो बहुत अच्छा लगता है, खुशी होती है।

जो बाबा ने सिखाया है, पालना दी है, पढ़ाया है, साथ-साथ जो बाबा से मिला है वो लाइफ में लाया है तो अनुभव होता है कि दिल में दिलाराम बैठा है और दिमाग में जो बाबा ने सिखाया है वो रिवाइज हो रहा है। रियलाइज भी हो रहा है। अभी हमारी लाइफ को देख कलम लगता जा रहा है, इतने बड़े संगठन को देख दिल से मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा निकलता है। आपने हमें अपना भाग्य बनाना बहुत अच्छा सिखाया है। हर श्वांस और संकल्प में मैं कौन, मेरा कौन... इसी में समय सफल होता है, तो बहुत अच्छा। सुबह को जो मुरली सुनी या पढ़ी सारा दिन वही चिंतन में होने से चित में और कोई बात नहीं होती है, तो हमारा जो सत् चित आनन्द स्वरूप है वो प्रत्यक्ष होता है। इससे लगता है बाबा आपने हमारा कितना अच्छा ऊंचा भाग्य बना दिया है। तो भाग्यवान वो जिसे सिवाए बाबा के और कोई नज़र में नहीं आता है। दिन रात सुबह शाम बाबा ही हमारी नज़रों में है। जहाँ तन होगा वहाँ मन होगा तो तन और मन बाबा में है तो बुद्धि कहीं और जा ही नहीं सकती है। जिसका अन्न पेट में जाता है, मन भी उसके पास चला जाता है, जैसा अन्न खाओ वैसा मन। बाबा ने इतना प्यार दिया है जो बाबा के प्यार से हमारे जीवन को जीने का ताकत मिली है। तो अच्छी तरह खुशी से जीना है। जीवन में रहते यात्रा पर जैसे जा रहे हैं क्योंकि यह यात्रा है हमारी शान्तिधाम से सुखधाम जाने की। सीधा सुखधाम नहीं जा सकते व्हाया सूक्ष्मवतन जाना है। वहीं से हमारा बाबा अभी भी हमारी पालना कर रहा है कि बच्चे तुम याद में रहो तो तुम्हारा कोई भी विकर्म का खाता जो थोड़ा भी रहा हुआ है वह खलास हो जाये।

सभी को बाबा कहता है बच्चे, हम कहते हैं बाबा। जीवन यात्रा सारी सफल हो रही है - बाबा, मुरली, मधुबन हमारे साथ है। अभी तो यही सभी के दिल में है ना बाबा... मुरली... मधुबन... बाबा की मुरली मधुबन में सुन रहे हैं। जहाँ बच्चे हैं वहाँ बाबा है, जहाँ बाबा है वहाँ मुरली है, वहाँ मधुबन है।

30-12-16

''सदा स्मृति रहे जो कर्म करना है वो श्रेष्ठ हो, साधारण नहीं, स्थिति अच्छी हो तो सेवा अपने आप होती है''

तीन बार ओम् शान्ति से ऑटोमेटिक मैं कौन, मेरा कौन, अब मुझे क्या करने का है... याद आ जाता है और कुछ ज्यादा सोचने की जरुरत नहीं है, इतना इज़ी है। अगर मैंने अपने आपको नहीं समझा तो बाबा को भी नहीं समझा। इतना अच्छा बाबा ने कितनी कमाल किया है, बाबा की कितनी महिमा करें परन्तु हमारी स्थिति ऐसी हो जो सिर्फ मुख से महिमा करने की जरुरत नहीं है परन्तु महिमा वा पूजा हमारी द्वापर के बाद भक्तिमार्ग में शुरू होती है, वह हमने अन्तिम जन्म में भी की है। 84 जन्म तो क्या पर पूरा कल्प ही मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, इसी ताकत ने चलाया है। आप समझते हैं यह राइट है? जैसे बाबा ने एक बारी सिर्फ इशारा दिया तू कौन है? मैं सर्वशक्तिवान की हूँ, यही योग है। इतना स्मृति रहे जो कर्म करना है वो श्रेष्ठ हो, साधारण भी नहीं, ऊंचे, जो सभी को प्रेरणा मिलें।

आजकल देखा जाता है कई बाबा की प्रेरणा और भावना से अपनी जीवन को बहुत अच्छी रीति से ध्यान देके सम्भाल रहे हैं। जो भी मुरली सुनते वा पढ़ते हैं तो बाबा ने आज क्या बोला, इसके सिवाए चिंतन में और कुछ आता ही नहीं है। कहते भी हैं अपने चिंतन में ले लो राम... यह भक्ति का, सांसारिक चिंतन की बात है परन्तु यहाँ पर भगवान की बातों का ही चिंतन चलता रहता है। सिर्फ हिम्मते बच्चे मददे बाप, जो तुमको करना हो कर लो। देखो, कितना बड़ा बाबा और कितना हमारा काम करता है। हमको कहता है तुम सिर्फ अपने दिल को सच्ची रखो क्योंकि सच्ची दिल पर साहेब राज़ी यह जो शब्द है ना, यह कभी भूले नहीं। लेकिन हम कहाँ हैं? यह भाग्य है, जो हमको ऐसे सामने बैठने को प्यार से मिलता है। चलते-चलते कुछ भी हो जाये लेकिन हमको कुछ नहीं होगा, इतना विश्वास खुद में और बाबा में है। सारे विश्व में बाबा ने सेवा कराई है, भारत में भी कोई कोना नहीं छोड़ा है सिन्ध से पंजाब, गुजरात से मराठा सभी जगहों पर सेवायें कराई माना पाँव रखा। अभी तो कहाँ कहाँ पाँव रखें! कोई कहते हमारे पास आओ, हमारे पास आओ। हमारी स्थिति अच्छी हो तो सेवा अपने आप होती रहती है। सच्चाई और प्रेम से चलना है, रहना है, वह भी नेचुरल यह देख और अनेक आत्माओं को प्रेरणा मिलती है।

ओम् शान्ति कहते हैं तो उसकी गहराई में जाओ, बड़ी सच्ची अच्छी शान्ति है। सच्चा बनने के लिये शान्ति है। और मेरे को देख अपने आप बनें तो वो ऐसे कौन हैं जो समझें, अपने आप बाबा की बड़ी मदद है, उससे कोई बन गये हैं, कोई बन रहे हैं। कौन समझता है बाबा की मदद से, अपने भाग्य से हमें बनने का भाग्य मिला है। तो क्या करने का है? वाह बाबा वाह! व्हाय व्हाय नहीं कहना है। कौन और कैसे ऐसे लम्बा बोलना पड़ता है और वाह बाबा वाह यह कितना सहज है बोलने में भी। बाबा ने तो हमको अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। अभी फिर हम ऐसे औरों को बनाके दिखायें, बाबा जैसा बना रहा है ऐसा बनकर दिखायें यह ख्याल नहीं आये कि मैं तो इतनी लायक नहीं हूँ। बनाने वाला बना रहा है तो इज़ी है, मेहनत नहीं है। सारी मोहब्बत काम कर रही है। सेवा भी मोहब्बत ही कर रही है, तो याद भी मोहब्बत से, फिर बाबा शब्द अपने आप निकलता है।

जो माला में आने वाले होंगे वो अभी इस समय बाबा के नयनों में बैठे होंगे। तो पलकों में बैठने में बड़ा आनन्द है, यह अनुभव किसी को है? जिसको बाबा की पलकों में बैठने का अनुभव है वो हाथ उठाओ। समझा मेरी बात। बाबा हमें प्यार से इन आंखों से जब देख रहा है तो दिल में क्या हो रहा है! तो भाग्यवान वो जो सदा ही मुस्कराके एक दो से मिलते हैं। थोड़ा भी सूक्ष्म आपस में अवाइड करने की स्थिति हमारी कभी न हो। जिधर देखता हूँ बाबा तू ही तू नज़र आता है। बाबा की रचना है ना, तो मेरे बाबा के बच्चे हैं, पर मेरे भाई बहनें हैं। यह अन्दर से भाई बहन का जो सम्बन्ध है वह बड़ा शुद्ध है, सच्चा है, प्यार है, अच्छा है। ओम् शान्ति।

—–